11 नवंबर 2017 को विवेकानंद केंद्र, मराठी प्रकाशन विभाग, पुणे में भगिनी निवेदिता के जीवन पर लिखी गई पुस्तक के विमोचन समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. सबसे पहले मैं विवेकानंद केंद्र, मराठी प्रकाशन विभाग, पुणे के कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से श्री सुधीर जोगलेकर जी का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ कि उन्होंने मुझे आप सबसे मिलने और बातचीत करने का अवसर प्रदान किया। इस विशिष्ट सभा में इस समारोह में शामिल होकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

2. विवेकानंद केंद्र जैसी संस्था का परिचय देने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यह समाज के साथ–साथ राष्ट्र निर्माण के कार्य में भी उत्कृष्ट योगदान देने के लिए सुविख्यात है। वर्ष 1972 में एक छोटी–सी शुरुआत कर के आज विवेकानंद केंद्र ने सभी देशवासियों और विशेषकर महाराष्ट्र में सभी के दिलों में एक विशेष स्थान बना लिया है। **विवेकानन्द जी के ओजस्वी विचारों से प्रभावित यह केन्द्र आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। अनुशासन, चरित्र व देशभक्ति की भावना युवा भारतीय के मन में बैठाने व एक संगठित, अजेय, जागृत एवं शक्तिशाली बिन्दु राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा में इस केन्द्र का योगदान उल्लेखनीय है।** हम सब जानते हैं कि आज पूरे देश में इस केंद्र की 225 से

अधिक शाखाएं हैं जो समाज के सभी वर्गों के लिए कार्य कर रही हैं। यह ग्रामीण विकास, शिक्षा, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, युवाओं और महिलाओं के संगठन और स्वामीजी के जीवन और शिक्षाओं पर आधारित पुस्तकों के प्रकाशन के लिए सुविख्यात है।

3. मैं यह कहना चाहूंगी कि हम महान लोगों के जीवन के बारे में पढ़ते हैं, उस पर मनन–चिंतन भी करते हैं, पर हमारा कर्त्तव्य है कि अपनी उस समझ को, उस शान को वास्तविकता की धरातल पर लाए, उसका उपयोग जनहित व राष्ट्र वैभव को बढ़ाने में लगाए तभी हम उसको सार्थक बना सकेंगे। आचार्य चाणक्य ने एक बार ऐसे विचार का उल्लेख किया कि राष्ट्रीय समस्याओं के विषय में अच्छे और बुद्धिमान लोगों की निष्क्रियता से उस देश को अधिक हानि होती है जबकि राष्ट्र के दुश्मनों व दुष्टजनों की खतरनाक गतिविधियों से कम नुकसान होता है।

4. आध्यात्मिक रूप से सेवा प्रदान करने के मिशन के रूप में इस संस्था की स्थापना करने का विचार जिस विलक्षण व्यक्ति के मन में आया उनका नाम है श्री एकनाथ जी रानाडे। इस केंद्र के रूप में उनकी इस पहल के पीछे यह महान विचार है कि मानव सेवा ईश्वर की आराधना के समान है और इसके पीछे 'त्याग' और 'सेवा' के राष्ट्रीय आदर्शों की मूलभावना निहित है।

5. स्वामी विवेकानंद ने एक नए और आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी शिक्षाओं से देशवासियों के मन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। महिला सशक्तिकरण, युवाओं, समाज, धर्म और राष्ट्रवाद के बारे में उनके विचार युगांतरकारी थे और आज भी उतने ही सामयिक एवं प्रासंगिक हैं।

6. मैं महिला सशक्तिकरण के बारे में स्वामी विवेकानंद के शब्दों को उद्धृत करना चाहूंगी जो आज भी प्रासंगिक हैं, **'जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं किया जाता, तब तक विश्व का कल्याण नहीं हो सकता। किसी पक्षी के लिए एक पंख के सहारे उड़ना संभव नहीं है।'**

7. उन्होंने हमें अपनी संस्कृति और देश पर गर्व करना सिखाया और देश के युवाओं का आह्वान किया कि वे आगे आएं और भारत माता को दासता से मुक्त कराने की ज़िम्मेदारी उठाएँ। वर्ष 1893 में शिकागो में पहली विश्व धर्म संसद में अपने संबोधन में उन्होंने मानवता को नया मार्ग दिखाया और पश्चिमी देशों को हमारी संस्कृति की महानता से परिचित कराया। आज घृणा, आतंकवाद और उग्रवाद से ग्रस्त विश्व में उनकी शिक्षाएं और भी प्रासंगिक हो गई हैं। उन्होंने हमे सिखाया कि धर्म का सही अर्थ मानवता की सेवा है और सच्ची सफलता का मूलमंत्र है। उन्होंने कहा थाः 'सच्ची सफलता इस बात में है कि आप अपने आपको कितना बेहतर बनाते हैं, आपकी जीवनशैली कैसी है,

आपका चरित्र कैसा है, और आप कैसे व्यक्ति हैं। सफल जीवन का यही अर्थ है।' इसीलिए उन्होंने हमेशा विश्व कल्याण के प्रयासों के मुक़ाबले व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को प्राथमिकता दी।

8. आज हमारे देश के युवाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं और मुझे विश्वास है कि स्वामी विवेकानंद के संदेशों में उनके भविष्य की दशा–दिशा तय करने की शक्ति है।

9. इस संबंध में मैं कहना चाहूंगी कि किताबें हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और अधिकांश लोगों के लिए किताबें पढ़ना उनके रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा है। किताबें हमारे जीवन में शिक्षक, मार्गदर्शक और मित्र की महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से किसी महान व्यक्ति के जीवन पर आधारित पुस्तक पढ़ने के बाद हमारे मन में सकारात्मक, विवेकशील, ऊर्जावान और सृजनात्मक विचारों का संचार होता है। हम ऐसे व्यक्तियों के आदर्शों और उनकी जीवनशैली और समाज कल्याण के लिए किए गए उनके प्रयासों से प्रेरणा लेते हैं। मैं युवा पीढ़ी से कहना चाहूंगी कि वे रोज़ कुछ समय निकाल कर महान व्यक्तियों की जीवनियाँ पढ़ें ताकि उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिले। ऐसी ही एक महान एवं प्रेरक व्यक्तित्व भगिनी निवेदिता हैं जो स्वामी विवेकानन्द जी की अनुयायी बनीं।

10. भगिनी निवेदिता जी का जन्म आयरलैंड में हुआ था एवं उन्होंने भारत को अपनी कर्मस्थली के रूप में स्वीकार किया एवं समाज सेवा के माध्यम से असंख्य भारतवासियों के कष्टों को दूर करने के लिए आजीवन अथक परिश्रम करती रहीं। सन् 1895 में स्वामी विवेकानन्द जी से हुई पहली मुलाकात ने ही उनके जीवन, दर्शन एवं विचारों में अतुलनीय परिवर्तन ला दिया था जिसका जिक्र उन्होंने अपनी पुस्तक "The master as I saw him" में किया है। स्वामी जी का कथन है कि ''ईश्वर वास्तव में निवैयक्तिक है, किन्तु इन्द्रियों के कुहासे के भीतर से देखने पर वह वैयक्तिक लगता है,'' ने सिस्टर निवेदिता के मर्म को छू लिया।

11. 18 जनवरी 1898 को वे कोलकाता पहुंची। मार्गरेट नोबेल से निवेदिता बनने में उन्हें अनुपम आनन्द की अनुभूति हुई। वह स्वामी विवेकानन्द जी की एक सुयोग्य अनुयायी, शिष्या एवं समाजसेविका थीं। स्वयं स्वामी विवेकानन्द जी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए यह कविता (A Benediction) उनके लिए लिखी थी जिसे मैं उद्धृत कर रही हूं:–

"The mother's heart, the hero's will,
The sweetness of the southern breeze,
The sacred charm and strength that dwell
On Aryan altars, flaming, free;
All these be yours, and many more

No ancient soul could dream before -
Be thou to India's future son
The mistress, servant, friend in one."

(हिन्दी अनुवादः– मां का ह्रदय, वीर की दृढ़ता, मलय–पवन की मधुता,
ज्वलंत आर्यवेदी की पावन शक्ति और मोहकता–
ये वैभव सब, अन्य और जो जन के स्वप्न बने हों–
तुम्हें सहज ही आज प्राप्य हो, निश्छल भाव ने हों
भारत के भावी पुत्रों की, गुंजे तुममे वाणी
मित्र, सेविका और बनो तुम मंगलमय कल्याणी!)

इस कविता के माध्यम से स्वामी जी ने न केवल भगिनी निवेदिता को आशीर्वाद दिया बल्कि उन्हें प्रेरणा भी दी। भगिनी निवेदिता के गुण, नए परिवेश एवं विषम परिस्थितियों में भी समाज सेवा के प्रति उनके अनुराग एवं लगन वास्तव में उन्हें आदर्श बनाते हैं। हम सब जानते है कि इस वैभवशाली मातृभूमि की हर संतान में वही शक्ति एवं सामर्थ्य का गुण है। उन जैसे लगन, दृढ़संकल्प, शक्ति एवं सेवा भाव से हम महिलाएं निश्चय ही समाज को एक सही दिशा दे सकती हैं एवं अपने समाज को उत्कृष्ट समाज बना सकती हैं।

12. भगिनी निवेदिता को हर पल इस बात का एहसास रहता था कि उनके गुरू विवेकानन्द जी का असली लक्ष्य अपनी जनता में नए सिरे से पुरुषार्थ की भावना

पैदा करना था। सिस्टर निवेदिता ने उदार हृदय से भारतीय जीवन तथा विचारों से यूरोपीय समुदाय को परिचित कराया। उनके समर्पित व्यक्तित्व का प्रभाव लेडी मिन्टो और लार्ड मिन्टो पर भी पड़ा। संक्षेप में निवेदिता ने अपनी कर्मस्थली भारत की हर सेवा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनके समकालीन व्यक्तियों ने इस बात की पुष्टि की है तथा सिस्टर निवेदिता का आचरण व वेशभूषा तथा आचरण सादा था और वह सबसे आत्मीयता से मिलती थीं। यानि वह भारतीय विचारधारा से सुपरिचित थी।

13. हमारी भारतीय संस्कृति एवं परम्परा में गुरू–शिष्य परम्परा का सदैव उच्च स्थान रहा है। चाहे वह कृष्ण–अर्जुन हों, महर्षि धौम्य–आरूणि हों, चाणक्य–चंद्रगुप्त हों, गुरू मत्स्येन्द्रनाथ–गुरू गोरक्षनाथ हों, समर्थ रामदास–शिवाजी महाराज हों, या फिर गोपाल कृष्ण गोखले–महात्मा गांधी, ये सभी गुरू–शिष्य परम्परा के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। स्वामी विवेकानन्द एवं भगिनी निवेदिता भारत की सदियों से चली आ रही उसी गुरू–शिष्य परम्परा का साक्षात् उदाहरण हैं।

14. मैं स्वामी विवेकानन्द एवं सिस्टर निवेदिता को एक आदर्श गुरू–शिष्य के रूप में देखती हूं और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह चिन्तन करने पर बाध्य हो जाती हूं कि वर्तमान समय में इसकी परिभाषा, दायित्व एवं कर्त्तव्य कहां अटक गई है, कहां भटक गई है।

15. एक बार तपोधन अवधूत भगवान दत्तात्रेय से महाराजा यदु ने प्रश्न किया। सद्गुरू कौन है? दत्तात्रेय ने कहा – जिसका आन्तरिक प्रेरणा से प्रकाश मिले, वही हमारे गुरू हैं। मनुष्य की जिज्ञासु बुद्धि हर वस्तु से ज्ञान रूपी प्रकाश ले सकती है। अज्ञानी ब्रह्म सदृश्य गुरू को पाकर भी प्रकाशहीन रह जाता है वहीं विवेकी अपने सुधार एवं उद्धार हेतु जहां भी थोड़ा–सा प्रकाश नज़र आता है, वहीं से अपने को प्रकाशित कर लेता है। "Master appears only when the disciple is ready".

16. भारतीय साधना पद्धति में गुरू भाव का एक महत्वपूर्ण स्थान है। गुरू गीता में कहा गया है किः–

''गुकारन्चान्धकारो हि रूकारस्तेज उच्यते।

अज्ञानग्रासकं ब्रह्म गुरुरेव न संशयः।।''

(गु अर्थात् अन्धकार और रू अर्थात् प्रकाश, अतः जो अज्ञानरूपी अन्धकार को हटाकर प्रकाश दे, वही गुरू है। गुरू पहले दैनिक ज्ञान को अपने जीवन में ढालते हैं फिर उसी ज्योति से शिष्यों को प्रकाशित करते हैं।)

गुरू–शिष्य परम्परा का बहुत महत्वपूर्ण आधार संयम है। इसके बिना कर्म उत्कृष्ट नहीं हो सकता। संयम भारतीय संस्कृति की आत्मा है और गुरू–शिष्य के

संबंध में संयम और अनुशासन की डोर की अहम भूमिका है। आज यह डोर ही विलुप्त हो गई प्रतीत होती है।

17. जब हम शंकर के मंदिर में जाते हैं, लेकिन वहां बाहर कछुए की मूर्ति होती है। इस कछुए के दर्शन के बिना शिव–दर्शन नहीं होते। कछुए की भांति बन कर ही गुरू के पास जाना होता है। कछुए की भांति ही अपने इन्द्रियों के स्वामी बनो। संसार का स्वामी बनने से पहले अपनी इन्द्रियों का स्वामी बनना चाहिए।

गीता में कहा गया है किः–

''युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

(जो खाने–पीने, आमोद–प्रमोद तथा काम करने की आदतों में नियमित रहता है, वह योगाभ्यास द्वारा समस्त भौतिक क्लेशों को नष्ट करता है।)

18. सतगुरू के हृदय में शिष्य के कल्याण की भावना समाहित होती है। उनका जीवन एक निश्चित आचार संहिता से बंधा होता है। वे जितेन्द्रिय होते हैं और मोह–माया एवं लाभ इत्यादि दुर्गुण उन्हें स्पर्श तक नहीं कर पाते। परंतु आज के कलियुग में यह देखा जा रहा है कि अज्ञानी, पाखंडी, दम्भी एवं प्रभु प्रकाश से हीन लोगों द्वारा गुरू नाम का बाजार सजा पड़ा है। वे गुरू महिमा का बखान कर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। जैसे गुरू की एक आचार–संहिता है, वैसे ही शिष्य कैसा

हो, यह भी एक चिंतन का विषय है। शिष्य को भी यह ज्ञान होना चाहिए कि वह गुरू के पास क्यों जा रहा है, उसे गुरू क्यों चाहिए, उसका उद्देश्य क्या है? क्या केवल भौतिक सुखों की प्राप्ति की खोज में या फिर भौतिकता से दूर आध्यात्मिकता की खोज में उन्होंने गुरू की प्राप्ति के मार्ग को चुना है ? या उनके जीवन का मूल उद्देश्य उस आध्यात्मिक शांति को प्राप्त करना है, जिसके लिए उसने जन्म लिया है। यह स्पष्ट होना बहुत आवश्यक है।

19. भगिनी निवेदिता ने एक सशक्त और प्रगतिशाली भारत का सपना देखा था इसलिए उन्होंने देश को राजनीतिक, सामाजिक और बौद्धिक दृष्टि से आगे ले जाने के भरसक प्रयास किए। वह स्वयं तो प्रयास करती ही थीं दूसरों को भी कार्य करने की प्रेरणा देती थीं। स्वाधीनता संग्राम में उनका बहुत योगदान रहा। उनके महान व्यक्तित्व से अनेक लोगों को देशवासियों की स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रयास करने की प्रेरणा मिली। उन्होंने लोगों को खुद में और अपनी शक्ति में विश्वास करना सिखाया और बताया कि वे भी महान कार्य कर सकते हैं और खुद पर और अपने देश पर गर्व कर सकते हैं। उन्होंने खुद को हमारे देशवासियों के साथ इतनी अच्छी तरह से जोड़ लिया था कि वह उनकी समस्याओं को अच्छी तरह समझ सकती थीं और उन्होंने

देशवासियों के साथ और उनके बीच रहकर उनकी कठिनाइयों को कम करने के लिए अथक प्रयास किए।

20. भगिनी निवेदिता की 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनके जीवन और कार्यों के बारे में लिखी गई चार पुस्तकों के सेट अर्थात 'मूल्यविषयक चिंतन' (डॉ. सुरुचि पाण्डेय), 'शिक्षणविषयक चिंतन' (डॉ. स्वर्णलता भिषिकर), 'राष्ट्रविषयक चिंतन' (श्रीमती मृणालिनी चिताले), 'कलाविषयक चिंतन' (श्रीमती अदिति जोगलेकर–हार्दिकर) का विमोचन करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। हम जानते हैं कि भगिनी निवेदिता अथवा मारग्रेट ई. नोबल स्वामी विवेकानन्द जी की शिक्षाओं से इतनी प्रभावित हुईं थीं कि उनके आह्वान पर वे तुरंत भारत आ गईं और अपना पूरा जीवन यहीं बिताया। स्वामी विवेकानंद की सहयोगी और प्रिय शिष्या के रूप में भगिनी निवेदिता ने उनकी शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार किया और भारत में रहते हुए विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने समाज सेवा का अप्रतिम उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है।

21. इन चार पुस्तकों में लेखिकाओं ने जिस आत्मीयता से भगिनी निवेदिता की अलग–अलग विशेषताओं को अपने कलम से कागज पर उकेरा है, वह निस्संदेह उत्कृष्ट एवं प्रशसनीय है। लेखिका स्वर्णलता जी ने भगिनी निवेदिता के भाव कि ''केवल गुरू की मत सुनो, अपनी विचार शक्ति को भी पैनी बनाओ,'' जैसे विचार

वाकई शिक्षा की सार्थकता को पूर्ण करते हैं। शिक्षित होने का मतलबब विवेकशील होना है। मुझे हर्ष है कि डॉ. सुरभि पाण्डे ने बहुत ही रोचकता से शब्द–चयन कर भगिनी निवेदिता जी के मूल्य चिंतन को पुस्तक का रूप दिया है। कैसे निवेदिता जी ने अपने जीवन में व दिनचर्या में भारतीयता को समाहित किया है, वह प्रेरणास्पद है।

22. उसी प्रकार, मृणालिनी चिताले जी ने भगिनी निवेदिता के राष्ट्रचिन्तन को प्रशंसनीय ढंग से लिखा है। परम आदरणीय निवेदिता जी का भारत से आत्मिक संबंध, उनकी देश की स्वतंत्रता एवं अस्तित्व के प्रयास में चहुंमुखी प्रयास, भारतीयों के कष्ट को समझते हुए उनके दुःख निवारण के प्रयास व दस वर्ष की अवधि में हर क्षण भारत माता की सेवा में समर्पित रह कर जो योगदान भगिनी निवेदिता ने दिया, वह कालजयी है। उनका राष्ट्रचिन्तन बहुत ही गहरा था।

23. भारतीय कला के माध्यम से भी राष्ट्रीयता को समझने व लोगों तक भारतीय कला को पहुंचाने का काम भगिनी निवेदिता ने किया। श्रीमती अदिति जोगलेकर–हार्दिकर द्वारा लिखित ''कलाविषयक चिन्तन'' में इसकी अभिव्यक्ति है। वास्तव में, किसी देश की कला वहां की संस्कृति का अभिन्न अंग होती है, यहां यह कहूं कि संस्कृति की अनुपूरक होती है। जिस स्थान से हमें प्रेम हो, वहां की कला

को हम नज़रअन्दाज नहीं कर सकते। कला राष्ट्रीय बोध जगाने का एक आवश्यक पहलू है और भगिनी निवेदिता ने इसे बखूबी समझा।

24. हम सब जानते हैं कि भगिनी निवेदिता की मानवता के शाश्वत मूल्यों में पूरी आस्था थी। उन्होंने भारत में विज्ञान और संस्कृति को बढ़ावा देने में बहुत रुचि ली। उन्होंने देश के सभी भागों की यात्रा की और विशेष रूप से स्वामी विवेकानंद के आदर्शों, धर्म, संस्कृति और भारतीय रीति रिवाजों के बारे में व्याख्यान दिये। उनके व्यक्तित्व का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह था कि वह एक बहुविध लेखिका थीं। उन्होंने एक निबंध संग्रह– 'द वेब ऑफ इंडियन लाइफ' नामक पुस्तक लिखी जिसकी प्रस्तावना कवि गुरु रबीद्रनाथ टैगोर ने लिखी थी। उन्होंने **'क्रेडल टेल्स ऑफ हिन्दुइज्म'** की रचना भी की जिसमें पुराणों, रामायण और महाभारत की कहानियाँ शामिल हैं ।

25. आज जब हम भगिनी निवेदिता की 150वीं वर्षगांठ मना रहे हैं तो उनके बहुमुखी व्यक्तित्व को दर्शाने वाली ये पुस्तकें हमारी ओर से उनके प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि है और उनके योगदान को याद रखने का उत्कृष्ट प्रयास है। मैं स्वामी जी की स्मृति में स्थापित विवेकानंद केंद्र संस्था को शुभकामनाएं देती हूँ और उसके सभी भावी प्रयासों में सफलता की मंगल कामना करती हूँ। मुझे

विश्वास है कि यह संस्था अच्छा काम करती रहेगी और उन्नति के शिखर पर पहुंचेगी।

26. मैं इस अवसर पर इन पुस्तकों की लेखिकाओं– डॉ. सुरुचि पाण्डेय, डॉ. स्वर्णलता भिषिकर, श्रीमती मृणालिनी चिताले और श्रीमती अदिति जोगलेकर हार्दिकर को इन पुस्तकों को लिखने में किए गए कड़े परिश्रम और इन पुस्तकों को समय से छपवाने के लिए धन्यवाद देती हूँ। एक बार फिर मैं उन्हें और इस समारोह से जुड़े बाकी सभी लोगों के भावी प्रयासों में सफलता की कामना करती हूँ।

धन्यवाद।

————————